SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI

MAHMUL-03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

International Peer reviewed Referred Research Journal

Issue-37, Vol-06 Jan. to March 2021

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Jan. To March 2021
Issue 37, Vol-06

Date of Publication
01 Feb. 2021

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

Editorial Board & review Committee

- **Chief Editor**
Dr Gholap Bapu Ganpat
Parli_Vaijnath,Dist. Beed Pin-431515 (Maharashtra)
9850203295, 7588057695
vidyawarta@gmail.com

- **M.Saleem**
saien Ghulam street
Fatehgarh Sialkot city
Pakistan. Phone Nr. 0092 3007134022
saleem.1938@hotmail.com

- **Dr. Momin Mujtaba**
Faculty Member,Dept. of Business Admin.
Prince Salman Bin AbdulAziz University
Ministry of Higher Education,Kingdom of Saudi Arabia, Tel No.: +966-17862370 Extn: 1122

- **N.Nagendrakumar**
115/478, Campus road,
Konesapuri, Nilaveli (Postal code-31010),
Trincomalee, Sri Lanka
nagendrakumarn@esn.ac.lk

- **Dr. Vikas Sudam Padalkar**
vikaspadalkar@gmail.com
Cell. +91 98908 13228 (India),
+ 81 90969 83228 (Japan)

- **Dr. Wankhede Umakant**
Navgan College, Parli –v Dist. Beed
Pin 431126 Maharashtra
Mobi.9421336952
umakantwankhede@rediffmail.com

- **Dr. Basantani Vinita**
B-2/8, Sukhwani Paradise,
Behind Hotel Ganesh, Pimpri,
Pune-17 Cell: 09405429484,

- **Dr. Bharat Upadhya**
Post.Warnanagar, Tq.Panhala,
Dist.Kolhapur-4316113
Mobi.7588266926

- **Jubraj Khamari**
AT/PO - Sarkanda, P.S./Block - Sohela
Via/Dist. - Bargarh, Pin - 768028 (Orissa)
Mob. No. – 09827983437
jubrajkhamari@gmail.com

- **Krupa Sophia Livingston**
289/55, Vasanthapuram,
ICMC, Chinna Thirupathy Post,
Salem- 636008 +919655554464
davidswbts@gmail.com

- **Dr. Wagh Anand**
Dept. Of Lifelong Learning and Extension
Dr B A M U Aurangabad pin 431004
Mobi. 9545778985
wagh.anand915@gmail.com

- **Dr. Ambhore Shankar**
Jalna,Maharashtra
shankar296@gmail.com
Mobi.9422215556

- **Dr. Ashish Kumar**
A-2/157, Sector-3, Rohini, Delhi -110085
*Ph.no: 0*9811055359

- **Prof. Surwade Yogesh**
Dept. Of Library, Dr B A M U Aurangabad , Pin 431004
Cell No: +919860768499
yogeshps85@gmail.com

- **Dr.Deepak Vishwasrao Patil,**
At.Post.Saundhane, Near
Kalavishwa Computer, Tq.Dist.Dhule-424002.
Mobi. 9923811609
patildipak22583@gmail.com

- **Dr.Vidhya.M.Patwari**
Vanshree Nagar,Behind Hotel
Dawat, Mantha Road, Jalna-431203
Mobi.9422479302
patwarivm@rediffmail.com

- **Dr.Varma Anju**
Assistant Professor, Dept. of Education,
Sikkim University 6th Mile, Samdur Tadong-737102
GANGTOK - Sikkim, (M.8001605914)
anjuverma2009@rediffmail.com

- **Dr.Pramod Bhagwan Padwal**
Associate Professor,Department of Marathi
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005.(Uttar Pradesh)
Mobi. 9450533466
pbpadwal@gmail.com

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

26) मुशर्रफ आलम ज़ौकी के कहानियों में सामाजिक परिवेश
प्रधानाचार्य डॉ. बी. डी. वाघमारे & प्रा. सुनिल एस. कांबळे, हिंगोली ||101

27) मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में चित्रित स्त्री विमर्श
डॉ. संजय गड़पायले, जिला परभणी, महाराष्ट्र ||106

28) भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था विकास में नवीनतम कृषि पद्धति का महत्व
डॉ. उषा कुमुठ & दिनेश मण्डलोई, इन्दौर ||110

29) बडवानी जिले में ग्रामीण कुटीर उद्योगों का आर्थिक विश्लेषण
डॉ. रजनी भारती & गीता मोरे, इन्दौर ||115

30) समकालीन कविता में स्त्री चिन्तन
शरण्या के, कालिकट, केरला ||122

31) ग्रामीण विकास : अर्थ और स्वरूप
पवन कुमार श्रीवास्तव, गाजीपुर ||125

32) रामदरश मिश्र के काव्य में सांस्कृतिक पर्यावरण से सम्बन्धित चिन्ताओं की अभिव्यक्ति
डॉ. वरिया श्रुति एम. ||128

33) तबला वादन में पंजाब घराना
गुरप्रीत सिंह, चण्डीगढ़ ||135

34) सौन्दर्य शास्त्र : कला और विज्ञान
प्रो. जीवन सिंह ||137

35) सलाम में अभिव्यक्त सामाजिक समस्याएं
श्रीकांत पि, कालीकट ||139

36) मध्य प्रदेश के सीहोर जिले में वर्ष २००३ से २०१७ तक सिंचाई के विभिन्न ...
श्रीमती लीना तिवारी, भोपाल ||142

37) हिन्दी—साहित्य के संवर्धन में भारतीय ज्ञानपीठ संस्था की भूमिका
ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी, लखनऊ ||148

38) उषा प्रियंवदा की कहानियों में नारी चित्रण
प्रा.डॉ.संगिता उप्पे, जिला लातूर ||153

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal
Jan. To March 2021
Issue-37, Vol-06
0101

७. वही, प्रति (ख), पृ. ८६
८. अयोध्या सिंह उपाध्याय, कबीर ग्रंथावली, पृ. २४२
९. पलटू साहब की शब्दावली, पद १६५, पृ. ५१
१०. सं. परशुराम चतुर्वेदी, दादू दयाल ग्रंथावली, पृ. २७४
११. सं. डा. वी. पी. शर्मा, संत गुरू रविदास वाणी पद–११८
१२. वही पद–१२८
१३. कबीरदास जी की बानी, पृ. २
१४. गुरू नानक की बानी, पृ. ३३
१५. संत कवि दरिया एक अनुशीलन, पृ. ६३

❑❑❑

26

मुशर्रफ आलम ज़ौकी के कहानियों में सामाजिक परिवेश

प्रधानाचार्य डॉ. बी. डी. वाघमारे
शोधनिर्देशक एवं विभाग प्रमुख,
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र,
आदर्श महाविद्यालय, हिंगोली

प्रा. सुनिल एस. कांबळे
हिंदी विभाग,
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली

****

शोधसार

प्रस्तुत शोधालेख में देश के विभाजन से लेकर आज तक के सामाजिक परिवेश का जिक्र किया है । विशेषत:मुशर्रफ आलम ज़ौकी के कहानियों में मुस्लिम समाज की घूटन, त्रासदी, दु:ख, पीड़ा का दर्दनाक चित्रण यथार्थ रूप में पेश हुआ है । शिक्षा का अभाव एवं गंदी राजनीति का शिकार आज के परिवेश में मुस्लिम समाज पिसता हुआ नजर आता है । षड़यंत्रकारी राजनेता अपनी घिनौनी चाल से साम्प्रदायिक दंगे कराकर राजगद्दी पर बैठकर फरमान छोड रहे है । उनका पर्दाफाश करने की कोशिश ज़ौकी जैसे साहित्यकार निडर होकर कर रहे है । सामाजिक परिवेश का जिक्र करने का प्रयास प्रस्तुत शोधालेख में किया है ।

मुख्य शब्द: समाज, सामाजिक परिवेश, यथार्थता, शोषण, दु:ख, पीडा, त्रासदी, आक्रोश

पृष्ठभूमि

साहित्य समाज का दर्पण होता है । साहित्य में मानव जीवन के अलग–अलग अंगो को सजाया जाता है । समाज का सही चित्रण साहित्यकार अपनी कलम के बलपर यथार्थ चित्रण करता है । समाज में

Principal
Shivaji College, Hingoli
Dist. Hingoli (MS)

व्याप्त कुप्रथाएँ, रुढी और परम्पराओं का सही चित्रण करता है । 'सामाजिक परिवेश' समझ लेने के पहले 'समाज' शब्द का अर्थ और उसकी परिभाषाएँ समझ लेना जरुरी है । 'समाज' शब्द का अर्थ कई परिवारों के संग्रहित समुह को 'समाज' कहा जाता है । एक जगह पर कई परिवार एवं समूह जहाँ एक साथ रहते है, उससे समाज बन जाता है।

उद्देश

१. देश के आजादी का परिवेश और आज की तिथि में सामाजिक परिवेश का जिक्र करना

२. मुशर्रफ आलम ज़ौकी ने मुस्लिम समाज को लेकर सामाजिक स्थिती को सही ढंग से किया हुआ चित्रण प्रासंगिकता का दर्शन

ग्रहितके

१. आज़ादी के पूर्व का सामाजिक परिवेश एवं आजादी के बाद का सामाजिक परिवेश

२. ज़ौकी के कलम से किया गया यथार्थ मुस्लिम समाज का चित्र

संशोधन पध्दति

प्रस्तुत शोध आलेख में तथ्य संकलन के द्वितीय तंत्र का अवलंब किया गया है । संकलित तथ्यों के गुणात्मक आधारपर वर्गीकरण करके वर्णनात्मक पद्धति के माध्यम से विश्लेषण किया गया है ।

विषय प्रतिपादन

हिन्दी भाषा के अधिकांश शब्दकोशों में समाज का अर्थ बतलाया है, वह निम्न प्रकार से

१. प्रामाणिक हिन्दी कोश में–''समूह, गिरोह, एक जगह रहनेवाला अथवा एक ही प्रकारका काम करनेवाले लोगों का वर्ग, दल या समूह, समूदाय किसी विशिष्ट उद्देश से स्थापित की हूई सभा ।''[१]

२. भाषा शब्द कोश में ''समाज, समूह, सभा, समिती, दल, वृंद, समुदाय, संस्था एक स्थान निवासी तथा समान विचारवाले लोगों का समूह किसी विशेष उद्देश या कार्य के लिए अनेक व्यक्तियों की बनाई या स्थापित की हुई सभा, आर्य समाज को आज राज समाज में बल शंभू को धुनकर्शी है ।''[२]

३. समाजशास्त्र कोश में 'समाज' शब्द का अर्थ है–''समाजशास्त्रीय लेखन में इस अवधारना का प्रयोग कई अर्थ एवं संदर्भ में हुआ है । अत्यंत सामान्य अर्थो में समाज को व्यक्तियों के एक संकलन के रुप में पारिभाषिक किया जाता है, किन्तु समाजशास्त्रीय दृष्टीकोन के अनुसार मात्र व्यक्तियों के संकलन की संज्ञा नहीं दी जा सकती, जब तक ऐसे व्यक्तीयों के बीच किसी प्रकार के सामाजिक संबंध न ले । समाजशास्त्रीय 'समाज' और एक समाज की धारना मैं भेद करते है । एक समाज, किसी एक सामाजिक इकाई, जैसे एक जनजाती अथवा एक देश को इंगित करती है । इस इकाई को अपनी राजनीतिक, आर्थिक, पारिवारिक स्वतंत्र होती है ।''[३]

४. बृहत हिन्दी कोश 'समाज' का अर्थ–''मिलना, एकत्र होना, समूह, संघ, दल, सभा, समिती अधिक्य समान कार्य करनेवालों का समूह विशेष उद्देशों की पूर्ति के लिए संघटित संस्था, ग्रहों का योग हाथी ।''[४]

५. गिडिंग्स के अनुसार, ''समाज स्वंय एक संघ है, एक संगठन है, औपचारिक संबंधों का योग है, जिसमें सहयोगी व्यक्ती परस्पर आबाद्ध है ।''[५]

६. संपूर्णानंद के अनुसार –''समाज शब्द का अर्थ है, जिसमें लोग मिलकर एक साथ, एक गती से एक से चले वही समाज ।''[६]

उपरोक्त परिभाषाओंका अध्ययन करने पर कहा जा सकता है कि, समाज शब्द का जन प्रचलित अर्थ है–समूह, सभा, सभ्य, संस्था आदी । यह समाज के साधारण अर्थ है, जो लोगों ने अपनी निजी दृष्टीकोन से लिए है । किन्तु समाजशास्त्रीयों ने 'समाज' को क्षेत्र विस्तृत माना है । और इसका अर्थ अलग–अलग ढंग से दिया है ।

इस प्रकार समाज मानवीय संबंधोंका ताना–बाना है । जहाँ मनुष्य साथ रहते हुए एक दुसरे के साथ सहयोग भी करते है । और आपस में विरोध भी करते है । इस तरह अपना जीवन व्यतित करते है । समाज मनुष्य के अस्तित्व का महत्वपूर्ण साधन है । उसके सिवा मनुष्य जीवन व्यतित करने के बारे में सोच भी नहीं सकता वह अकेला बिना समाज के जीवन व्यतित नहीं कर सकता । मनुष्य सामाजिक प्राणी है । वह समाज में जन्म लेता है और समाज में ही बडा होता है । मनुष्य को समाज पर निर्भर रहना पडता है

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

। समाज के द्वारा उसकी जरुरते पूरी होती है । जन्म से लेकर मृत्यूतक समाज से जुडा होता है । इस तरह व्यक्ति के परिवेश का केंद्रबिन्दू 'समाज' है । व्यक्तिद्वारा समाज का निर्माण होता है । समाज में रहते हुए उसके नितिमूल्य, रीतिरिवाज बनाता है । उसका अनूपालन करता है । रविंद्र मुखर्जी के शब्दो में —"किसी समाज के स्त्री—पुरुष अपने ही तरह के लोगों के साथ मिलते है, काम करते है या बात करते है, तब मूल्य और आदर्श—नियम ही उनके क्रमबद्ध सामाजिक संसर्ग का संभव बनाते है ।"[७]

इस प्रकार सामाजिक परिवेश का सम्पर्क मानव जीवन के उन सामान्य समाजहीतों से होता है । अपनी सामान्यता के कारण जो समाज जीवन में व्यक्त किये जाते है । मानव अपने समाज के प्रति जागरुक रहता है । अपना जीवन पूर्णत: समाजानुरुप व्यतित करता है ।

सामाजिक परिवेश के बारे में विभिन्न विद्वानो ने अपनी—अपनी दृष्टि से परिभाषाएँ बनाई है । पाल एच लैण्डिस ने सामाजिक पर्यावरण (परिवेश) की व्याख्या करते हुए लिखा है — "सामाजिक पर्यावरण के अंतर्गत अन्य लोगों की दुनिया होती है जिसके बाहर मनुष्य अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय जैसे एक वर्ष या एक दिन बहूत कम व्यतित करता है । जब कभी लोग उसके चारों ओर नहीं होते है, तब भी मनुष्य उनके संबंध में सजग रहता हे । क्योंकि स्व (self) और समाज (Society) एक ही वस्तु के दो पक्ष है ।"[८]

मुशर्रफ आलम ज़ौकी ने हिन्दी कथासाहित्य में अपनी अलग पहचान बनायी है। सामाजिक परिवेश का सही चित्रण उनके साहित्य में होता है । उर्दू के साथ हिन्दी भाषा में ही अपनी तेज तरार कलम चलाई है और सफल हो चुके है । उपन्यास, नाटकों के साथ—साथ कहानियों में समाज का यथार्थ चित्रण करते आए है । अपनी प्रतिभा के बलपर अपना श्रेष्ठतव उन्होंने हिन्दी जगत में स्थापित किया है। उनके कहानियों में समकालीन परिस्थिती का यथार्थ दर्शन होता है । वर्तमान में भारत वर्ष में हो रहे दमन या जान बूझकर किये जानेवाले अन्याय, अत्याचार एवं शोषण का सही चित्रण अपनी कहानियों में करते है । पाठकों के मन में हलचल मचाते है । इस सडी—गली व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश एवं विद्रोह प्रदर्शित करते है ।

आधुनिक काल में भारतेंदू युग में कहानी का उत्थान सही माईनें में हो गया । इस युग से ही कहानी के क्षेत्र में जागरण एवं ढाचे बद्ध कहानी लिखना प्रारंभ हो गया । आधुनिक परिवेश तथा अंग्रेजो की नई शिक्षा निति आदि के द्वारा सामाजिक समस्याओंका यथार्थ चित्रण नव लेखक करने लगे । तथा आज़ादी के बाद देश में सामाजिक और राजनैतिक जीवन में धिमी गति से क्यों न होपरिवर्तन हुआ । पुरानी शैली की कहानी से नई कहानी ने अपनी अलग पहचान बनायी । कहानी, कथ्य, शिल्प, भाषा, संवेदना सभी स्तरों पर पुरानी कहानी से नई है । वह आम आदमी के जीवन से जुड़ गयी कमलेश्वर के शब्दो में —"नई कहानी ने जीवन की सारी संगति—विसंगतियों, जटिलताओं दबाओं को महसूस किया यानी नई कहानी पहले और मूल रुप में जीवनानुभव है । उसके बाद कहानी का रास्ता जीवन से साहित्य की ओर हुआ है, इसलिए उसमें अनुभूति की प्रामाणिकता रचना प्रक्रिया उसमें अनुभूति मूल अंश माना ।"[९]

२१ वीं सदी के कहानिकारों ने नये अनुभवों को अभिव्यक्त किया है । नये विषयों को एवं समाज की अलग—अलग समस्याओं का गंभीर होकर पर्दाफाश किया है । उसमें सुशिला टाकभौरे, सुरजपाल चौहान, दयानंद बटोही, मृदुला गर्ग, इन्दुबाली, यादवेंद्र शर्मा, एस.आर. हरनोट, ज्ञानप्रकाश विवेक, अंजु दुआ, मैत्रेयी पुष्पा, ओमप्रकाश वाल्मीकी, भगवानदास मौरवाल और मुशर्रफ आलम ज़ौकी आदि आते है ।

इसी कडी में मुशर्रफ आलम ज़ौकी जी ने हिन्दी कथा संसार को प्रभावशाली लेखन से समृद्ध किया है । आपके कहानी संग्रह में गुलाम बख्श, फरिश्ते भी मरते है, बाजार की एक रात, भूखा इथोपिया, फ्रिज में औरत, मंडी, लॅबोरेटरी, शाही गुलदान, मत रो शालीगराम, इमाम बुखारी का नॅपकीन—फिजिक्स —केमेस्ट्री, अलजेबरा महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है ।

ज़ौकी जी के अधिकांश कहानियों में सामाजिक परिवेश का दर्शन हमें होता है । समाज का यथार्थ

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

चित्रण या जीवन्त चित्रण उन्होंने किया है । 'फ्रिज में औरत' इस कहानी संग्रह की कहानियों में समाज की बदली हुयी परिस्थितीयों पर आधारित कहानियाँ लिखी है । 'बाजार की एक रात' कहानी संग्रह में बाजार पर कहानियाँ लिखी है । वर्तमान समय में भूमंडलीकरण और वैश्विकीकरण के कारण बदलते स्वरुप को इतना परिवर्तनशील बना दिया है कि मनुष्य ने अपने एहसास को बंद कर बाजार में कैद कर लिया है । इस कहानी संग्रह में बाजार के परिवर्तित रुप और वेश्यावृत्ति का पर्दाफाश किया है । मुशर्रफ जी के कहानियों में देश विभाजन के दर्द की चूभण महसूस होती है । साम्प्रदायिक दंगो की तह तक पहूँचते हूए उसे सामाजिक और राजनैतिक पृष्ठभूमि के तौर पर प्रस्तूत करते है । वर्तमान स्थिती का सही चित्रण वे कहानियों में करते है । उन्होने बाबरी मस्जिद, गोधरा कांड पर अपनी कमल चलाई है । दिन दहाडे न्यायपालिका का खून कैसे किया जा रहा है, गुजरात दंगो की त्रासदी पर भी उन्होंने निडर होकर सच्चाई पेश की है ।

'फरिश्ते भी मरते है' इस कहानी संग्रह में भी मुस्लिम परिवेश में जीवन व्यतित करनेवालों की त्रासदी को अभिव्यक्त किया है। पहली कहानी 'किसी थकी हुई रात की दास्तान नहीं' शिर्षक की है । परवेज अहमद की लड़की आज़ाद विचारों की है । मुस्लिम समाज में लडकियों के उपर बहूत सारे कडे नियम एवं पाबंदिया है, उस घूटन से बाहर निकलने का प्रयास एलिशा करती है —"एलिशा कमाल आग की लपटों और धूएं की तस्वीर ले रही थी नही, शम्मो भाई मैने एलिशा को सचमूच डाँटा था, यह क्या बात है, एलिशा, मकान जल रहे थे और तुम तस्वीरें उतार रही थी । और एलिशा का जवाब था, 'मुझे मजा आता है, डैडी ऐसी तस्वीरें उतारते हुए, मैं सही मायनों में पागल हो जाती हूँ ।"[१०]

मुशर्रफ जी ने सामाजिक भावना की कदर अपनी कहानियों में की है । फटिक सिंग एक मुस्लिम लडकी से शादी करना चाहता है, उसका सही वर्णन लेखक ने कियाहै —"क्योंकि अब्बा नहीं चाहेंगे ! 'तुम हिन्दू हो' वह खतरनाक मुस्कुराहट के साथ देख रही थी और वह मुस्कराहट की धार से कटा जा रहा था । बस इतनी सी बात पर, हाँ, अब्बा बहूत कट्टर है, वह तो लडकियों की पढ़ाई के खिलाफ थे, लेकिन तुम मुझसे शादी क्यों करना चाहते हो ।"[११]

'इकबालिया बयान' कहानी में पूलीस अधिकारी द्वारा किस तरह मुस्लिम समाज को निशाना बनाया जाता है उसका सही चित्रण किया है । "मत रो सालिगराम' कहानी में नूर मूहम्मद की कहानी है । वह एक हिन्दू लडकी का पोषण किस तरह करना है और लोग उसे शक की नजर से देखते है—"नूर मूहम्मद ने एक बोझील साँस ली, मंदिर—मस्जिद मामले की तरह इसमें भी मजहब का रंग है, तुम्हारा मजहब जीत जाएगा और मैं हार जाउँगा ।"[१२]

इस तरह मुशर्रफ जी ने अपने इस कहानी संग्रह में घिनौर्न मानसिकता को उजागर किया है । वर्तमान में भी वही हाल है विशिष्ट प्रकार की सांप्रदायिक मानसिकता को भारत वर्ष में पेश किया जा रहा है । 'फ्रिज में औरत' कहानी संग्रह की कहानियों में बदले हुए समय का चित्रण किया गया है । उनकी भाषा में चाह, संवेदनशीलता और अनुभवों के कोलाज से निर्मित होती है ।

गुलाम बख्श कहानी से देशविभाजन के बाद बनी हुई पारिवारिक संघर्श की बात आती है। भाई—भाई जायदाद के लिए किस प्रकार लढते है । उसका सही चित्रण किया है । मौला बख्श गुलाम बख्श का बड़ा भाई है, बिवी के बहकावे में आकार दो कुँआरे भाईयों को घरसे बाहर निकलने को कहता है । गुलाम उसका विरोध करता है —"जाओ नही निकलता, मेरा मकान है, पहले मैंने देखा था, दखल मेरा है ।"[१३]

बडेभाई से तंग आकर गुलाम बख्श हिन्दुस्तान आकार रोजी—रोटी की कलाश में होता है। उसका मकान किसी और लोगों ने कब्जा कर रखा है । मरते दम तकवह दूसरो की दफ्तर में चपराशी की नौकरी करता है । वह अपने घर की तलाश में है वह उस इलाके में जाता है, वह तो अपने पुराने घर गया था । जी हॉ, उसी घर में जो मौला हवेली ताज बख्श में, किसी जमाने में था और आज जहॉ दूसरे का कब्जा है।[१४]

'गुलाम बख्श' कहानी में गुलाम बख्श की

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

त्रासदी का सही चित्रण हुआ है ।

'कहानी तुम्हे लेखनेवाली है' इस कहानी में बुढ़ापे की त्रासदी को अभिव्यक्त किया है । अफसर की जिंदगी बितानेवाले महेबूब की पत्नी के मर जाने के बाद अकेलेपन को महसूस करते है । घर में बेटे है, बहूएँ है, पोते है फिर भी उनका दिल नही लगता । उसके एक साल छोटे मित्र अली की मौत से परेशान होते है—"और महेबूब! यह भी देखा कि, रात के एक बज चुके है, तुम सोने की कोशिश कर रहे हो —और अली की बातें कहीं नही है — रोज आनेवाले अली की बातें कहीं नही है । इसलिए होशियार हो जाओ । कहानी तुम्हें लिखनी है।'[१५]

सारांश

मुशर्रफ जी ने अपनी कहानियो में समाज का यथार्थ चित्रण किया है । मुस्लिम समाज की शिक्षा के अभाव से होती है घूटन, त्रासदी, पीडा, दु:ख, दर्द का सही दर्शन किया हे । घिनौनी राजनीति से सरकार से मुस्लीम समुदाय को किस प्रकार टार्गेट किया जाता है, उनकी बहू बेटियों की इज्जत को दंगो में किस प्रकार लूटा जाता है । साम्प्रदायिक दंगे फैलाकर जिंदा जलाया जाता है उसका जिवन्त वर्णन ज़ौकी ने किया है । अत: मुस्लीम समाज को टार्गेट मत करो, सामाजिक एकता को बरकरार रखना यही इन्सानियत है, मानव धर्म है । आज देश में सरकार न्यायपालिका, सी.बी. आय एवं अन्य संस्थाओं पर अपने अपने लोग बिठाकर उनसे काले धंदे करवा रही है । अत: देश में अमन, शांति होनी चाहिए —

मुशर्रफ आलम ज़ौकी जी ने अपने साहित्य में अलग—अलग प्रयोग लिये है । और इसी कारण उन्हें हम प्रयोगधर्मी कहानीकार कह सकते है । आज हिन्दी और उर्दू में पुरी उर्जा के साथ साहित्य सश्जन कर रहे है । उनकी कहानीयोंकी विशाल दुनिया बन रही है ।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :—

१. रामचंद्र वर्मा — प्रामाणिक हिन्दी कोश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद तश्तीय, संस्करण, १९९७ पृ. ८३०.

२. कालिका प्रसाद — बृहत हिन्दी कोश — ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस, संवत २००९ पृ. १३७९.

३. डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसल'—भाषा शब्द कोश — रामनारायण लाल प्रकाशन इलाहाबाद, तृतीय संस्करण—१९५९ पृ.क्र! १८९२

४. हरगोविंद तिवारी—तुलसी सागर, हिन्दुस्थानी एकाडमी, इलाहाबाद, प्रथम सं. १९५४, पृ. १८१२

५. हरिकृष्ण रावत—समाजशास्त्र कोश, रावत पब्लीकेशन, जयपूर प्रकाशन —१९८६ पृ.क्र.१५९.

६. डॉ. विपीन गुप्त—हिन्दी नाटको में समसामायिक परिवेश निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली प्रकाशन—२०००, पृ.क्र. ११७

७. रामबिहारी सिंह तोमर—समाजशास्त्र की रुप रेखा, पोरवाल प्रिंटींग प्रेस आगरा—१९६०, पृ. क्र. १०७.

८. जगमोहन बलोखरा—अनमोल वचन—एच. सी प्रकाशन, नई दिल्ली २००९, पृ.क्र. ६.

९. नई कहानी की भूमिका—कमलेश्वर, पृ. क्र.२२.

१०. फरिश्ते भी मरते है—मुशर्रफ आलम ज़ौकी, पृ.क्र.१६

११. फरिश्ते भी मरते है—मुशर्रफ आलम ज़ौकी, पृ.क्र. ४८

१२. मत रो सालिगराम— मुशर्रफ आलम ज़ौकी, पृ.क्र. ७५

१३. गुलाम बख्श—मुशर्रफ आलम ज़ौकी, पृ.क्र. १५

१४. वही... पृ.क्र. २९

१५. वही... पृ.क्र. २५

❑❑❑

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist Hingoli (MS)